हरिया हरक्यूलीज की हैरानी उपन्यास में मनोहर श्याम जोशी की संवदेनात्मक दृष्टि

डॉ. अर्जुनसिंह पंवार (हिन्दी)

सारांश–

हिन्दी के क्षेत्र में जिस उत्तर आधुनिकता के कारण मनोहर भयाम जोशी को विशेष रूप से याद किया जाता है इसका श्रेय उनके उपन्यास 'हरिया हरक्यूलीज की हैरानी' को जाता है। उपन्यास में जोशी जी की संवेदना में विविधता है। मानव मन के विभिन्न मार्मिक पहलुओं को पात्रों के माध्यम से अभिव्यक्त किया है। व्यक्ति विशेष से लेकर समाज की संवेदनात्मक दृष्टि को पाठकों के समक्ष रखा है।

शोध पत्र–

मनोहर श्याम जोशी के 'हरिया हरक्यूलीज की हैरानी' उपन्यास के विषय में गोपाल राय ने कहा हैं कि 'हरिया हरक्यूलीज़ की हैरानी में कोई कथ्य नहीं है; यह एक प्रकार का शाब्दिक और कथात्मक खिलवाड़ है। यह 'गूमालिंग' नामक रहस्यपूर्ण जगत की रहस्य और कौतुकपूर्ण कथा है जिसमें लेखक की खिलन्दड़ी मनोवृत्ति खूब रमी है। इसे उत्तर आधुनिकता से जोड़कर देखने का प्रयास जैसा कुछ लोगों ने किया है। मनोरंजक है। पहाड़ समाज की मानसिकता और भाषा का पुट देकर कहानी को कुछ प्रत्ययकारी बनाने का प्रयास किया है।''1

मनोहर श्याम जोशी ने अपने उपन्यास 'हरिया हरक्यूलीज़ की हैरानी' में अपनी संवेदना को कई रूपों में व्यक्त किया है। कभी वह राय साहब की बीमारी की अवस्था के रूप में दिखती है तो कभी उनकी सेवा करते हरिया के रूप में उन्होने समाज में रहने वाले बीमार लोगों व हरिया जैसे तुच्छ समझे जाने वाले बेटे के रूप में संवेदना व्यक्त की है ।

बेटों के प्रति संवेदना– मनोहर श्याम जोशी ने अपने उपन्यास 'हरिया हरक्यूलीज़ की हैरानी' में बेटों के प्रति भी संवेदना व्यक्ति की है ।

गिरवाण दत्त तिवारी (राय सैप) को लकवा मार गया हैं उनकी सेवा उनका बेटा हरिया करता है कभी–कभी जब गिरवाण दत्त गुस्से में आ जाते है तो कहते हैं कि भगवान ने मेरे पांच बेटों में से तुझ पागल को ही क्यों जिन्दा रख है बाकी मेरे सारे बेटे मर गये है।'' अगर भगवान ने बुढापे में मेरी सेवा के लिए पांच में से एक ही बेटा बचाना था तो उसने तुझे ही क्यों चुना रे मदुआ? सबसे बडा कृपालु इम्पीरियल बैंक में खजांची लगा था, दूसरा गिरीश फॉरेस्ट सर्विस में आ गया था, तीसरी शिरीश रेल्वे में इंजीनियर हो गया था और चौथा गिरिजा जो अपने बाप का अस्सल बेटा था। आई.ए.एस. में चुन लिया गया, क्यों कि जो उन चारों को अपनी पैतीसवी होली–दीवाली देखना भी नसीब नहीं हुआ और क्यों तू बचपन में बीस तरह की बीमारियॉ होने के बावजूद जिन्दा रहा है ?''[2]

परिवार के प्रति संवेदना– मनोहर भयाम जो ी ने अपने उपन्यास, 'हरिया हक्यूलीज़ की हैरानी' में परिवार के प्रति भी संवेदना व्यक्त की है। राय सौंप का जीवन पहले बहुत ही आराम से अच्छी नौकरी करते हुए गुजरा, लेकिन उन पर अचानक विपत्ति आ जाती है और उनका सारा परिवार नष्ट हो जाता है, सिर्फ एक ही बेटा बचता है, उसे भी वे स्वयं मूर्ख मानते हैं और स्वयं को भी लकवा मार गया है।

'सिरजनहार को पता था कि इसके पैदा होने के बाद गिरवाण दत्त के कुनबे को क्षय लग जायेगा। एक–एक करके उसके चार बेटे, चार बहुऍ, दो बेटियाँ, तीन दामाद, आठ पोते, सात पोतियाँ और दस नाती–नातिनी राजरोग की भेंट चढेंगे यही न हीं, स्वयं गिरवाण दत्त को 60 वे वर्ष में लकवा मार जायेगा, यह खाट पकड लोग, मगर जीवन फिर भी उसे पूरी बेरहमी और बेशरमी से पकडे रहेगा। कुगत होनी थी बुढापे में, कुकर–योनि में जीना था रे।''[3]

बीमार के प्रति संवेदना– मनोहर श्याम जोशी ने अपने उपन्यास 'हरिया हरक्यूलीज़ की हैरानी' में बीमार के प्रति भी संवेदना व्यक्त की है । जब हरिया गूमालिंग को विषय में जिज्ञासु हो जाता है, तब उसकी पूर्ण जानकारी के लिए वह डॉक्टर नीलाम्बर के पास पहुँचाता है तब वहॉ गणेशदत्त शास्त्री भी मौजूद रहते हैं, उनको देखकर हरिया को

उस विशय पर चर्चा करने पर संकोच होता है हरिया उन्हे अपने पिता के स्वास्थ्य के विषय में पूरी जानकारी देता है, तभी शास्त्री बोल उठते है। अब तो तुम तुम्हारे पिता को मरने दो अगर उनकी दवा–दारू बंद कर दो और उनके मुँह में गंगाजल डालते जाओ, अब उन्हें भाांति से मरने दो तब डॉक्टर नीलाम्बर कहते हैं' ये आप कैसी बात कर रहे है शास्त्री जी, डॉक्टर का धर्म तो अन्तिम क्षण तक बीमार की जान को बचाने को कोशिश करते रहना ठहरा है।''[4]

पिता के प्रति संवेदना– मनोहर श्याम जोशी ने अपने उपन्यास 'हरियास हरक्यूलीज़ की हैरानी' में पिता के प्रति भी संवेदना व्यक्त की है। जब राय सैप की मृत्यु हो जाती है तब हेमन्त पिटारे के खजाने के लिए हरिया पर कई आरोप लगाता है लेकिन हरिया कहता है मुझे खजाना नहीं चाहिए, मैं तो गूमालिंग का यह खजाना स्वयं देने जाऊँगा वो भी अपने खर्च पर ताकि पिताजी पर लगा यह श्राप समाप्त हो सके। ''हरिया ने कहा '' इस जुआरी और शराबी कबाबी हेमन्त को अपने पापी पेट की लगी है जब कि असल सवाल मेरे अभी–अभी खत्म हुए। बाबू की आत्मा पर लगे पाप के एक बहौत बडे दाग का है। वह तो गूमालिंग में प्रायश्चित करके की धूल सकता है। इत्ता बडा दाग है वह कि मैं उसके सोच के बोझा से जैसा जित्ता दब गया हूँ, वैसा–उत्ता तो मैं अपने बीमार बाबू और उनके अपने ही जिते बीमार परिवार की तामारदारी के बोझ से भी नहीं दबा था कहा। आप लोग सोच रहे होंगे कि बाबू के गुजरा जाने से यह हरिया हल्का–जैसा महसूस कर रहा होगा आज। लेकिन मैं तो बाबू के बाप के बोझ से जमीन में धंससा जा रहा हूँ महाराज।''[5] फिर हरिया कहता है कि यह हेमन्त कह रहा है मैं झूठा हूँ यह पत्र मैंने अपने बाबू की पीठ पीछे भी उन्हे कुछ नहीं कहा और अब उनके मरने के बाद उन्हें पापी बताकर उन्हे बदनाम कैसे कर सकता हूँ, जिससे पूरी बिरादरी का समर्थन हरिया को मिला। ''मुझे प्रायश्चित के लिए जाने से आप लोग रोकना चाहे तो भी नहीं रोक सकते क्योंकि मैं एक जगह जो क्या हूँ? मैं हर जगह हूँ और जैसे मैंने हर जगह हूँ और जैसे मैंने हर जगह अपने बाबू की आँत में अटके मल की सफाई की अब तक, वैसे अब उनकी आत्मा पर जमें मल की करूँगा।''[6]

जब श्मशान भूमि में हरिया की आँखों में आँसू झर रहे है वह चुपचाप मौन बैठा–बैठा रोये ही जा रहा है तभी हरिया चिता के आस पास घुमकर चिता में कूदने की कोशिश की लेकिन उसे डूम ने बचा लिया नहीं तो वह भी चिता में जल जाता, तब मुरलीधर ज्यू वाले गुट ने हरिया के आचरण की मानवीयता से ओत प्रोत भावुक व्याख्या की। उनके अनुसार – ''हरिया अपनी अब तक की जिन्दगी जीवित पिता की सेवा में लगा चुकने के बाद आगे की जिन्दगी उनके प्रेत की सेवा में लगाना चाहता था, इसलिए उसने चिता में कूदने की कोशिश की। पिता के प्रेत की मुक्ति के लिए उस पर वह जो भी होगा, गूमालिंग–हूमालिंग, उसका भूत सवार हो गया। ''[7]

जब कभी गिरवाण दत्त गुस्सा होते कहते है तू मुझे खाना क्यों देता है। हरिया तू तो मेरा दु मन है, मुझे जबरन खाना खिलाता है, तब हरिया अपने पिता से कहता है ''दुश्मन तो वह होगा, जो तुम्हे खाना नहीं देगा बाबू। मैं तुम्हारा बेटा हूँ। जिन्दा रखने के लिए कुछ न कुछ तुम्हारे मुँह में डालूँगा ही और नहीं खाने की जिद करोगे तो डॉक्टर नीलाम्बर को बुला दूंगा। ड्रिप चढ़ा देगा। ''[8]

हरिया के प्रति संवेदना– मनोहर श्याम जोशी ने अपने उपन्यास हरिया हक्यूलीज़ की हैरानी' में नायक हरिया के प्रति भी संवेदना व्यक्त की है। गिरवाण दत्त जी के पांच बेटे थे, उनमें से कोई भी उनके तरह किसी रियासत का दीवान नहीं बन पाया था, लेकिन वे अपने सबसे छोटे बेटे के प्रति यह भावना रखते हैं मन में – '' सबसे बाद में पैदा हुआ पढने में सबसे फिसड्डी हरिया, उनकी दृष्टि में विशेष रूप से निराशाजनक ठहरा।''[9] राय सैप हरिया से कहते समाज में मेरी बहुत पहचान है। तू लोगों से क्यों नहीं मिलता जिससे तू सफल हो सके। ''जरा सोशल बन भाऊँ। मेरा नाम लेकर बडे लोगों से मिलेगा–जुलेगा तो तेरी तरक्की के रास्ते खुलेंगे।''[10]

जब हेमन्त खजाने के पिटारे का हिस्सा लेने की बात करता है तब उसका कोई भी समर्थन नहीं करता बल्कि हेमन्त पिटारा मिलने की आस में कई लोगों से उधार ले चुका था बिरादरी हरिया के पक्ष में यह तर्क देती है ''बिरादरी यह भी मानती थी कि हरिया ने अपने बाबू की, अपने भाईयों की और हेमन्त समेत अपने तमाम भतीजों की इतनी ज्यादा सेवा कर रखी है कि उसे उस बदले में इस पिटारे के रूप में

मेवा मिलना ही चाहिए।''[11]

जब हरिया गूमालिंग से हेमुली बोज्यु के साथ नहीं आता है तब बिरादरी में कुछ लोग हरिया के विशय में अनेक बातें करते है तब भरी सभा में मुरलीधर ज्यू कहते हैं– ''मरने दो हेमन्त को और गोली मारे पिरूली कैंजा को, लेकिन जरा हरिया कक्का के बारे में भी तो सोचो भाई। तुम उन्हे हँसी में हरक्यूलीज़ कहने वाले ठहरे लेकिन जैसा तप, जैसा प्रायश्चित हरियास कक्का ने किया, किसी और ने कर रखा है बिरादरी में? गाँधी ज्यू अपना पखाना साफ करके महात्मा हो गये लेकिन कक्का तुम्हारे बीमारों का टट्टी, पेशाब, कफ साफ करके भी तुम्हारी नजरों में गू ही ठहरते रहने वाले है क्या ? .... अरे तपोबल था तभी वह आईनों का आईना उसे देखने को मिला। ''[12] जब बिरादरी के कुछ लोग हरिया की मौत को घटिया बताने लगाते है, तब हरिया की मौत के विषय में मुरलीधर ज्यू द्वारा यह कहा जाता है। ''उस हरिया की मौत को घटिया मौत मत बनाओं, जो हमारी बिरादरी की न मालूम कितनी मौतों का चश्मदीद गवाह था और जो मुर्दा नहलाने से लेकर फूँकने तक का सारा काम उस समय चुपचाप करता जाता था, जिस समय हम रोने का रिवाज निबाहने का सुख लूट–रहे होते थे। इतना कहने के बाद मुरलीधर ज्यू रो पडे। उनके साथ–साथ बिरादरी के और कई लोगों ने रोने का सुख लूटा। ''[13]

नायिका के प्रति संवेदना– मनोहर श्याम जोशी ने अपने उपन्यास हरिया हरक्यूलीज़ की हैरानी' में नायिका के प्रति भी संवेदना व्यक्त की है। जब नायिका राय सैप जैसे लोगों के साथ रहकर अपने आपको कलंकित मानती है, वह उस पाप को मिटाने के लिए बौद्ध भिक्षुणी बन जाती है और निर्धनों की सेवा करती रहती है। नायिका इन भ्रष्ट, लोभी, पैसा पूजने वाले लोगों के साथ रहकर लगा कलंक मिटाने के लिए एक सुदूर और निर्धन गाँव में असहाय स्त्री, बच्चों की सेविका के रूप में नया जीवन भाुरू करती है। बौद्ध भिक्षुणी के रूप में अपने इलाके की दलित वर्ग की स्त्रियों की मुक्ति के लिए और स्वयं अपने मोक्ष के लिए समाज कार्य और साधना करते हुए।''[14]

पत्नी के प्रति संवेदना – मनोहर श्याम जोशी ने अपने उपन्यास हरिया हरक्यूलीज़ की हैरानी में पत्नी के प्रति भी संवेदना व्यक्त की है। जब गिरवाण दत्त को हरिया चाय पीने कोदेता है तब हरिया पूछता है बडी बोज्यू कहती है कि मेरी ईजा बहुत अच्छी चाय बनाती थी आखिर उस चाय की क्या खासियत होती थी तब अपनी पत्नी को याद करते हुए राय सैप कहते है। ''बताकर क्या होगा रे? वैसी पत्ती वैसा दूध, वैसा पानी और क्या कहते है, वैसी सावधान, कहाँ से ला सकेगा तू? अभागे कभी पी होती तो ईजा की बनाई हुई चाय, तो तुझे मालूम होता कि उसमें क्या खासियत थी? तेरे को जन्म देने के बाद उसने खाट पकडी तो फिर उठी हीं नहीं। वह गयी और उसके बाद सब कुछ चला गया।''[15]

कुँवारेपन के प्रति संवेदना– मनोहर श्याम जोशी ने अपने उपन्यास 'हरिया हरक्यूलीज़ की हैरानी' में हरिया के कुँवारेपन के प्रति भी लेखक ने संवेदना व्यक्ति की है। हरिया की भाादी नहीं हुई इस समस्या को लेकर गिरवाण दत्त जी को हमेशा दुःख होता था। इसलिए वे उसे कई बार विवाह करने को कह चुके हैं। ''कभी–कभी गिरवाण दत्त जी को पहले अपने अन्य पुत्रों की संतानों के और फिर स्वयं अपने कारण हरिया के कुँआरे रह जाने का दुःख भी होता था वह बहुधा कहते भी थे ''चेला, तू मेरे मर जाने के बाद बेसहारा–जैसा हो जायेगा, निपट अकेला ब्याह कर ले इतनों को अग्नि दे रखी तूने, तुझे भी तो कोई अग्नि देने वाला होना चाहिए भाऊ। ''[16] जब कोई हरिया के विवाह के लिए रिश्ता लेकर आता तो राय सैप कहते उसी से पूछ लो हरिया कह देता की मेरे पास ऐसा कुछ नहीं की दुल्हन को सुख दे पाउंगा। लेकिन कुछ लोग गरीब लडकियों के भी रिश्ते लेकर आये। ''लाने वाले ऐसी गरीब असहाय लडकियों के रिश्ते भी ले आये, जो सुखों से परिचित ही नहीं थी और जिनके लिए कुँआरेपन के अभिशाप से मुक्ति ही बहुत बडा सुख हो सकता था भले ही उनके लिए हरिया जैसे अभागे मदुआ से ही जन्म–भर का गठजोड क्यों न करना पडे लेकिन हरिया नहीं माना। ''[17]

दुनिया में होने वाले परिवर्तन के प्रति संवेदना– मनोहर श्याम जोशी ने अपने उपन्यास 'हरिया हक्यूलीज़ की हैरानी' में दुनिया में होने वाले परिवर्तनों के प्रति भी संवेदना व्यक्त की गई है।जब पिरूली कैंजा वापस अकेली लौटती है और बिरादरी के सामने एक कहानी सुनाती है कि उस हरिया के साथ क्या हुआ वह कहती है कि वह मुझसे अनेक

विशयों पर प्रश्न पूछता रहा उसने अपने बापू के पापों के प्रायश्चित की चर्चा की फिर अपने धर्म व दर्शन के सवाल पूछने लगा बुढ़िया बन्नों वापस लडकी कैसे बन गई।

''मैंने उसे समझाया कि दुनिया भी बराबर बदलती रहती है और हम भी बराबर बदलते रहते है। तुम आज जैसे हो वैसे कल नहीं थे और कल जैसे हो जाओंगे वैसे आज नहीं हो। तुम अपने को ''मैं'' तो कहते चले जाते हो, मगर यह ''मैं'' हमेशा एक जैसा थोडी रहता है। वह तो पल में रत्ती, पल में माशा हो जाता है। बदलकर कुछ और बनने में तुम वह भी बन ही सकने वाले ठहरे जो तुम बहुत पहले कभी थे। दुनिया क्षण–क्षण बदलती है और इंसान भी। इसलिए दोनों में से अपने को अलग करों।''[18]

संन्दर्भ सूची

1' हिन्दी उपन्यास का इतिहास' गोपालराय, राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली तीसरी आवृत्ति 2013 पृश्ठ 366।
2 'हरिया हक्यूलीज़ की हैरानी' – मनोहर श्याम जोशी, राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली दूसरी आवृत्ति 2008 पृष्ठ 7।
3 वही, पृष्ठ 7–8।
4 वही,पृष्ठ 37।
5 वही,पृष्ठ 53।
6 वही, पृष्ठ 54।
7 वही,पृष्ठ 54।
8 वही,पृष्ठ 17।
9 वही, पृष्ठ 6।
10 वही, पृष्ठ 8।
11 वही,पृष्ठ 91
12 वही,, पृष्ठ 120।
13 वही, पृष्ठ 121।
14 वही, पृष्ठ 70।
15 वही, पृष्ठ 14।
16 वही, पृष्ठ 33–34।
17 वही,पृष्ठ 34।
18 वही, पृष्ठ 94।

ग्राम–चौराना
जिला रतलाम (म.प्र.)–457001